स्त्री मनोरक्षा प्रशिक्षण

महिलाओं के खिलाफ हिंसा:
पीढ़ी दर पीढ़ी होने वाले ट्रामा का आशय
और
पुरे जीवन काल में होने वाला ट्रामा

सीखने के उद्देश्य

1. **हिंसा को समझना**

- हिंसा क्या है?
- विभिन्न प्रकार की हिंसा
- विभिन्न संदर्भों और स्थितियों में होने वाली हिंसा

2. बहु पीढ़ीगत (पीढ़ी दर पीढ़ी होने वाले ट्रामा) आघात

- प्रभाव और आशय

3. पुरे जीवन काल में होने वाला ट्रामा

4. ट्रॉमा के अनुभव और उसके प्रभाव का जीवन चार्ट

- लाइफ चार्ट कैसे तैयार करें?
- जीवन के विभिन्न चरणों में हिंसा के अनुभव को समझने के लिए इसका उपयोग कैसे करें?

5. हिंसा का सामना करने वाली महिलाओं के मूल्यांकन और हस्तक्षेप में इस्तेमाल किए जाने वाले व्यापक नैतिक और नारीवादी सिद्धांत

आइए समझते हैं: हिंसा क्या है?

'जानबूझकर किया गया है ' की अवधारणा

इसमें उपेक्षा और अभाव शामिल है

इसके अक्सर निम्नलिखित क्षेत्रों में आजीवन परिणाम होते हैं:
1. शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य
2. सामाजिक-व्यावसायिक कामकाज
3. आर्थिक और सामाजिक विकास

हिंसा की व्याख्या

स्वयं निर्देशित

पारस्परिक

समुदाय

सामूहिक

हिंसा के प्रकार

शारीरिक हिंसा

यौन हिंसा

मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक हिंसा

नियंत्रण और जबरदस्ती

पीछा करना और साइबर माध्यम से पीछा करना

शारीरिक हिंसा-

- नुकसान, मृत्यु, विकलांगता, चोट या नुकसान की संभावना के साथ जानबूझकर शारीरिक बल का उपयोग।

- यह किसी वस्तु या हथियार के उपयोग से किया जा सकता है; और/या किसी अन्य व्यक्ति के खिलाफ उससे जबरदस्ती या किसी के प्रति शरीर, आकार, या ताकत का उपयोग किया जाना

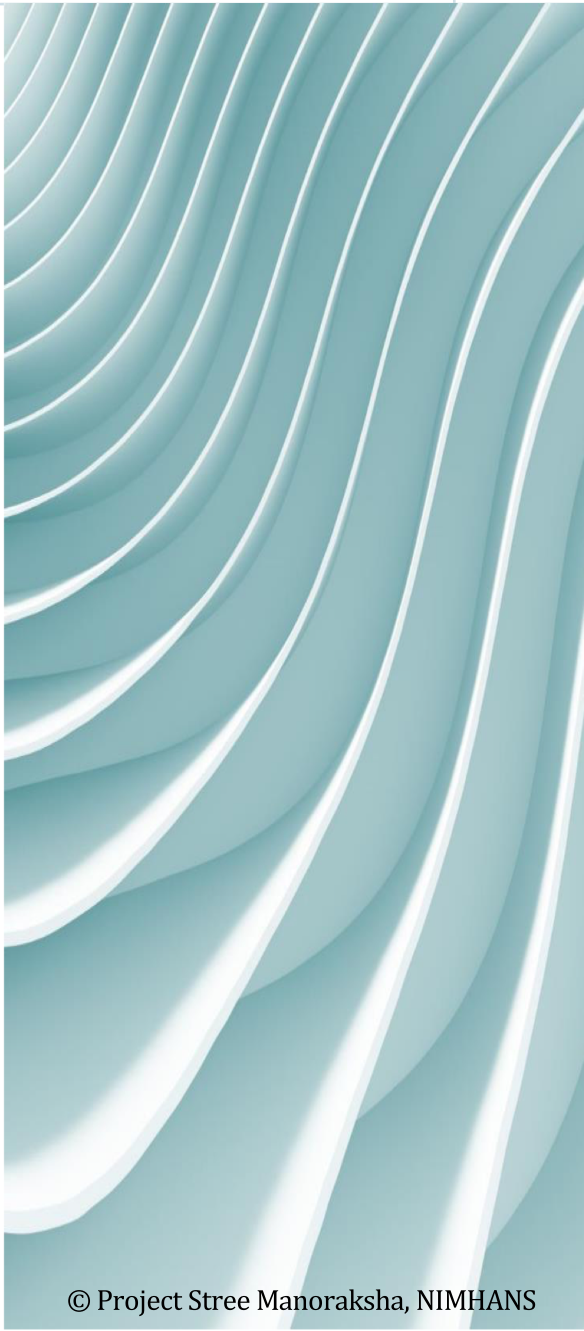

यौन हिंसा-

- किसी भी प्रकार की यौन क्रिया, यौन क्रिया करने का प्रयास या अवांछित यौन टिप्पणी आदि।
- किसी भी व्यक्ति द्वारा पीड़ित के साथ उनके संबंध की परवाह किए बिना किया गया यौन उत्पीड़न
- घर या फिर काम सम्बन्धी किसी भी सेटिंग में

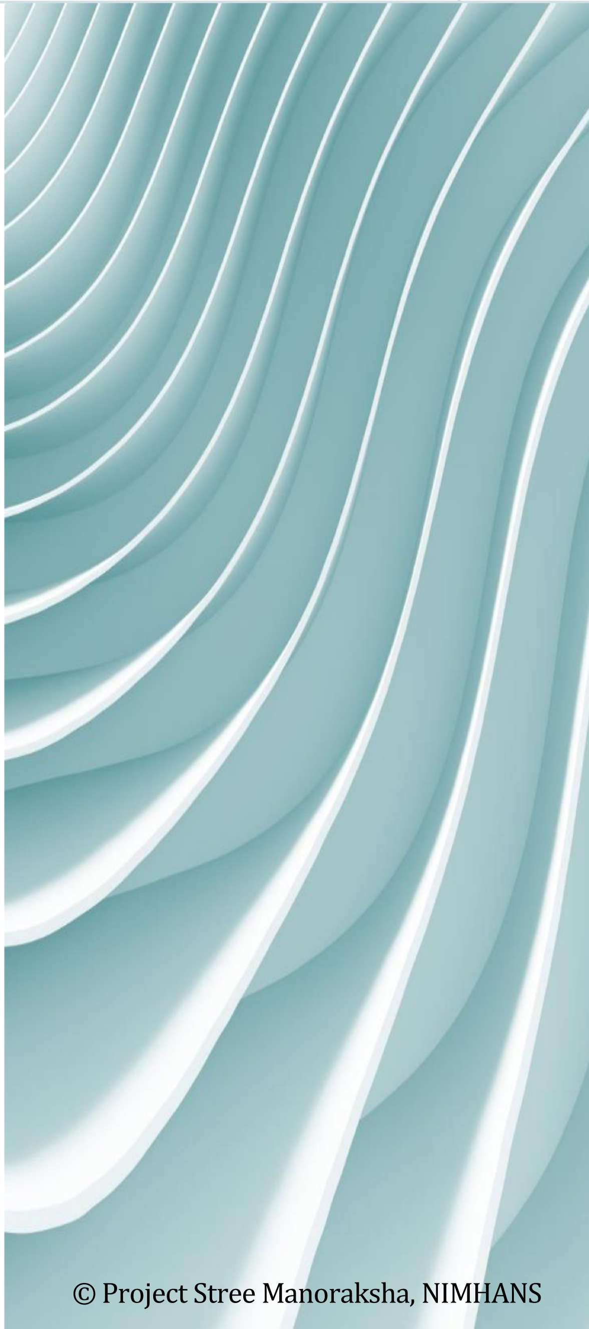

मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक हिंसा-

- जानबूझकर किए गए कृत्यों, कृत्यों की धमकियों, या की गयी जबरदस्ती के कारण होने वाला आघात

- इसमें शामिल हो सकते हैं-

- पीड़िता को प्रताड़ित करना
- पीड़ित के कार्यों को नियंत्रित करना
- पीड़ित को उसके वातावरण से अलग करना
- पीड़ित को बुनियादी संसाधनो से मना करना

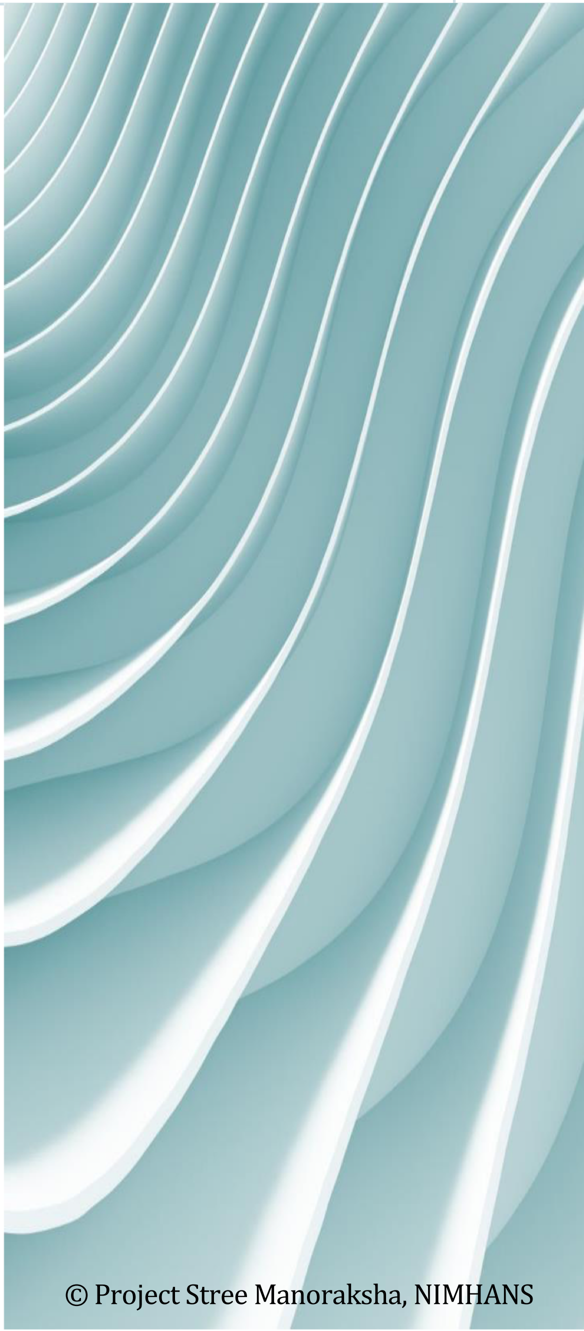

नियंत्रण और जबरदस्ती के व्यवहार

व्यवहार को नियंत्रित करना किसी व्यक्ति को समर्थन या सहयोग के उसके स्रोतों से अलग करके, व्यक्तिगत लाभ के लिए उनके संसाधनों और क्षमताओं का शोषण करके और उनके रोजमर्रा के व्यवहार को विनियमित करके उन्हें अपने अधीन बनाने का एक कृत्य है।

जबरदस्ती का व्यवहार हमले, धमकी, अपमान या अन्य दुर्व्यवहार जैसे कृत्यों का एक निरंतर कार्य या पैटर्न है जिसका उपयोग किसी व्यक्ति को नुकसान पहुंचाने, दंडित करने या डराने के लिए किया जाता है।

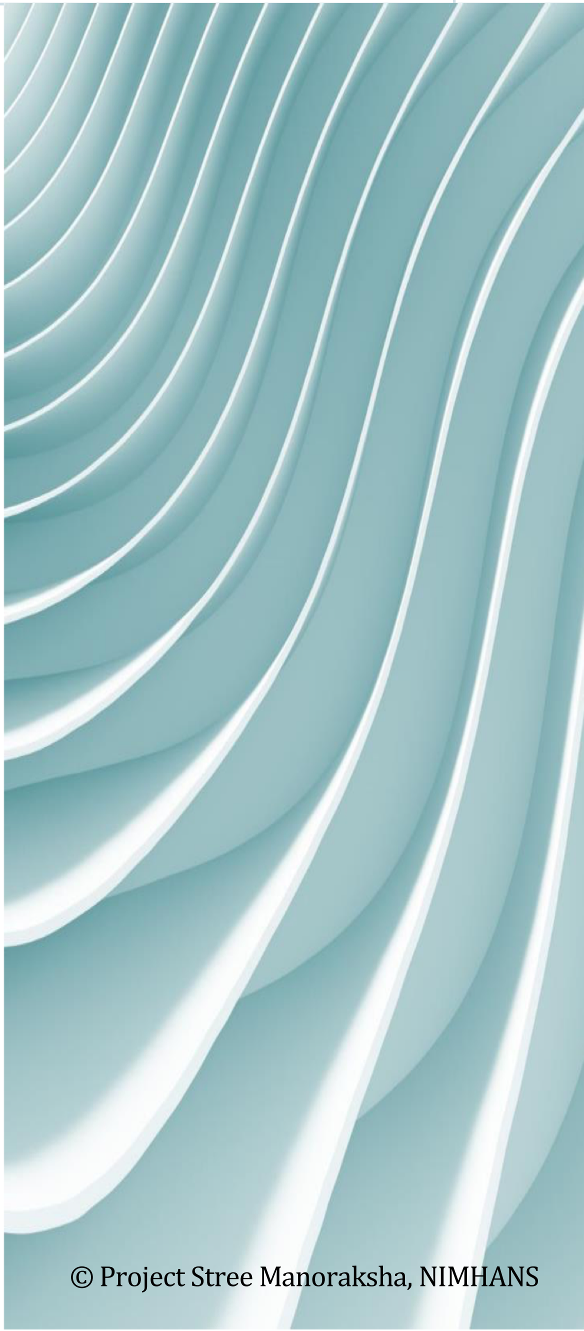

नियंत्रण और जबरदस्ती के व्यवहार

इस तरह के व्यवहार में शामिल हो सकते हैं:

- किसी व्यक्ति को उसके दोस्तों/परिवारों से अलग करना
- उन्हें उनकी बुनियादी जरूरतों से वंचित करना व्यक्ति, उनके समय और उनकी गतिविधियों की निगरानी करना
- उनके दैनिक जीवन पर नियंत्रण रखना, जैसे कि वे कहाँ जा सकते हैं, किसको देख सकते हैं, कब सो सकते हैं, वे क्या पहन सकते हैं
- उनके धन पर नियंत्रण
- जान से मारने की धमकी, या उनकी निजी जानकारी प्रकट करने की धमकी देना

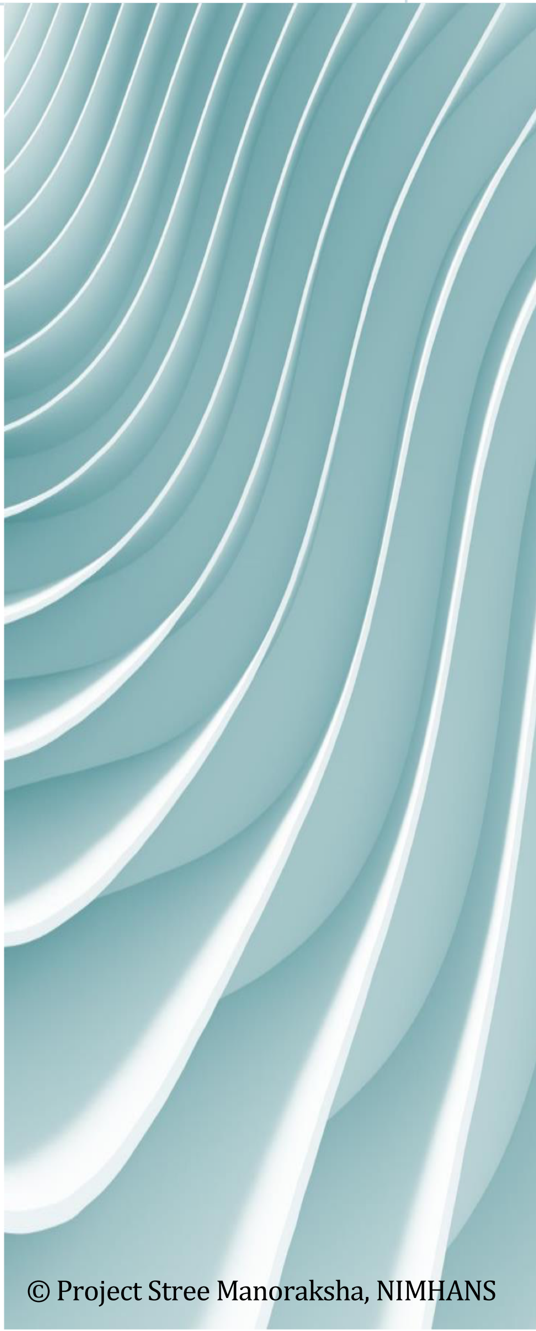

पीछा करना-

- परेशान करने वाला/धमकी देने वाला व्यवहार, जैसे:

➢ किसी व्यक्ति का पीछा करना
➢ किसी व्यक्ति के घर या व्यवसाय के स्थान पर बार बार जाना
➢ परेशान करने वाले फोन कॉल्स करना
➢ लिखित संदेश या वस्तु छोड़ना
➢ किसी व्यक्ति की संपत्ति को नष्ट करना

- साइबर माध्यम से पीछा करना

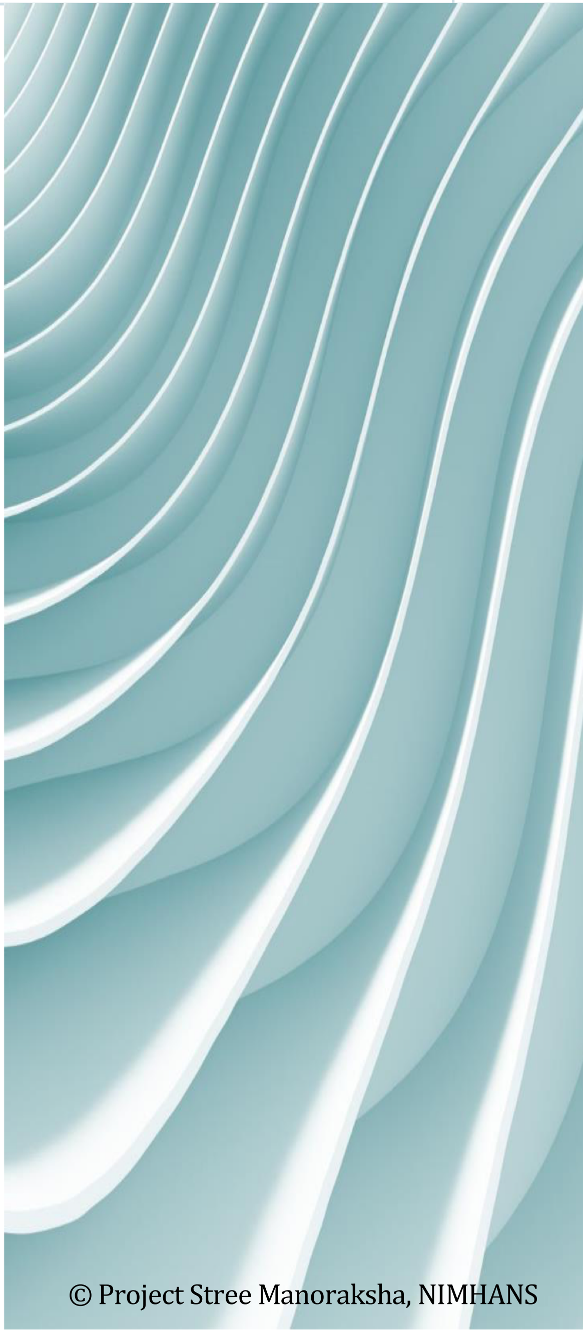

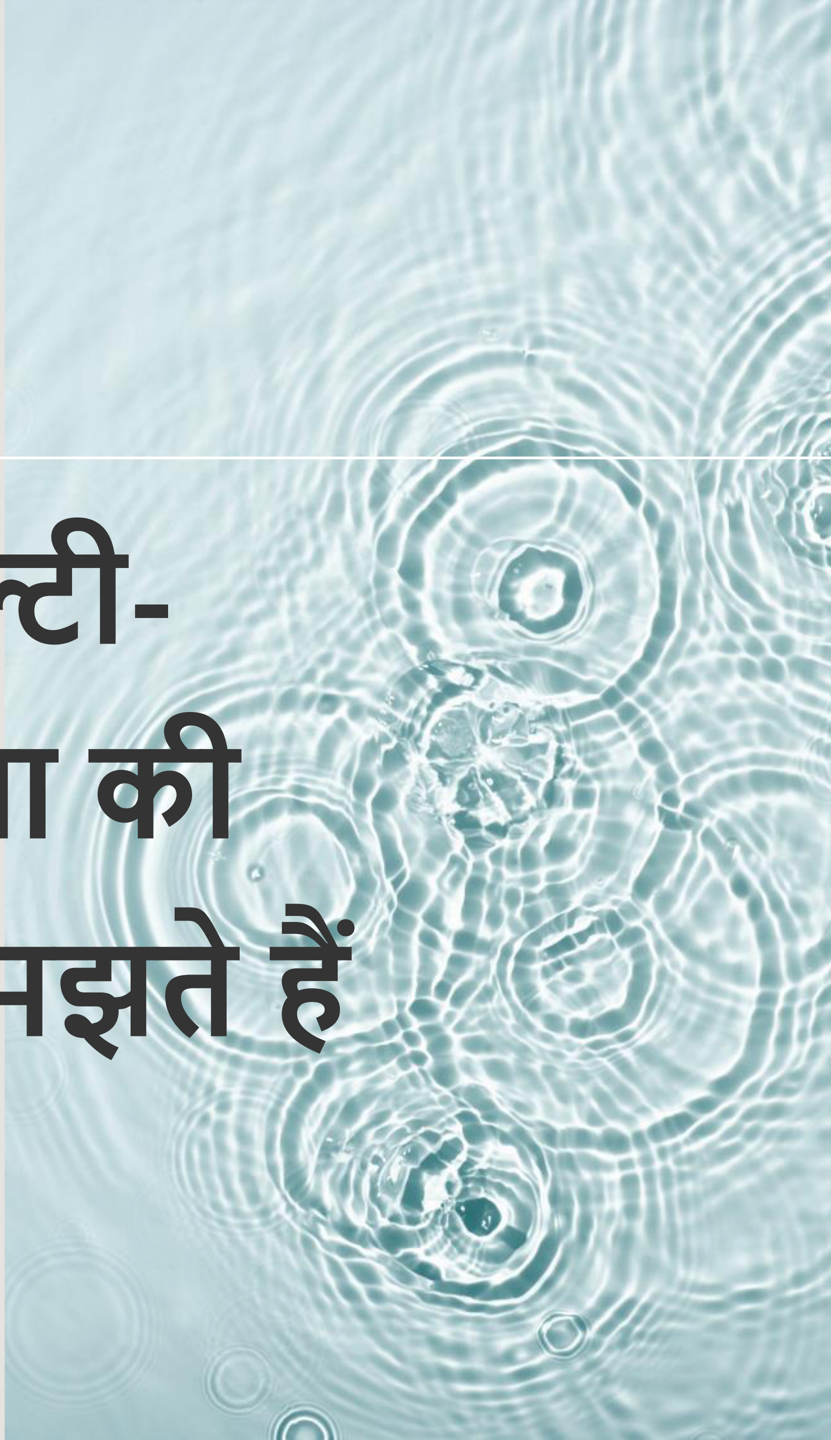

आइए अब मल्टी-जेनरेशनल ट्रॉमा की अवधारणा को समझते हैं

बहु-पीढ़ी का आघात

- वह आघात जो उन पीड़ितों की, जिनके साथ ट्रामा हुआ है, की आगे आने वाली पीढ़ियों को प्रभवित करता चला जाता है

- प्रभावित करने वाली एक दर्दनाक घटना से शुरू होता है:

- एक व्यक्ति, परिवार के कई सदस्य, या सामूहिक आघात जो बड़े समुदाय को प्रभावित करते हैं, उदा। युद्ध

बहु-पीढ़ी का आघात

व्यक्ति:

1. लगातार क्रोध, भय, चिंता, या खराब मूड जैसी भावनाएं

2. आत्मसम्मान और प्रभावकारिता (सेल्फ एस्टीम)में कमी

3.सामाजिक अलगाव और अकेलापन

4. सामाजिक-व्यावसायिक कामकाज में दक्षता की कमी होना

बहु-पीढ़ी का आघात
आशय और प्रभाव

परिवार:

1. निरंतर वित्तीय बाधाएं

2. शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य मूलभूत आवश्यकताओं में निवेश में कमी

3. परिवार में उच्च शोर स्तर

4. परिवार के सदस्यों के बीच खराब सामंजस्य

बहु-पीढ़ी का आघात
आशय और प्रभाव

समुदायः

1. प्रतिबंधित आर्थिक विकास

2. व्यापक हिंसा और अभाव

समाजः

1. स्वास्थ्य की लागतों को पूरा करने में विफलता

2. आपराधिक न्याय और सामाजिक कल्याण से समझौता

बहु-पीढ़ी के आघात
आशय और प्रभाव

देश:

1. धीमा आर्थिक विकास

2. सुरक्षा से समझौता

3.धीमा सामाजिक विकास

4. सामाजिक-आर्थिक असमानता

दर्दनाक घटनाओं और बच्चो के गरीबी स्तर पर होने वाले विकास के बीच संबंध

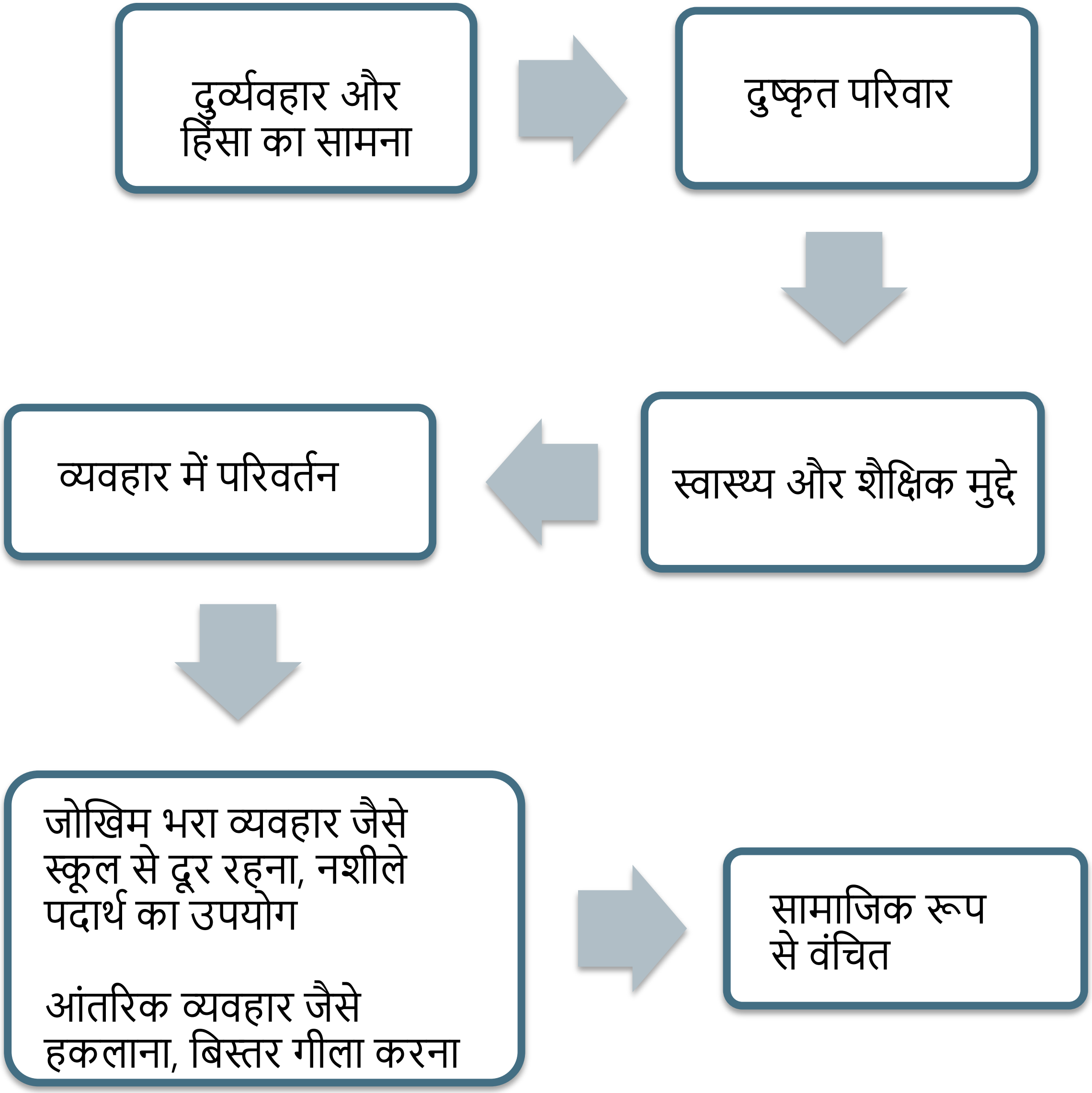

दुर्व्यवहार और
हिंसा का सामना

दुष्कृत परिवार

स्वास्थ्य और शैक्षिक मुद्दे

व्यवहार में परिवर्तन

जोखिम भरा व्यवहार जैसे
स्कूल से दूर रहना, नशीले
पदार्थ का उपयोग

आंतरिक व्यवहार जैसे
हकलाना, बिस्तर गीला करना

सामाजिक रूप
से वंचित

बहु-पीढ़ी का आघात
आशय और प्रभाव

उच्च जोखिम:

व्यवहार संबंधी समस्याएं- झूठ बोलना, असावधानता, रिश्तों में समस्या, शारीरिक गुस्सा

मादक द्रव्यों का सेवन

भावनात्मक समस्याएं- अलगाव, उदासी, लाचारी, चिंता और निराशा

आत्म-हानि से सम्ब्रधित व्यवहार

लाइफ-टाइम ट्रॉमा

- दर्दनाक घटनाओं को तनावपूर्ण जीवन की घटनाओं से उनकी गंभीर गंभीरता से अलग किया जाता है
- दर्दनाक घटनाएं:

➢ यौन और शारीरिक शोषण

➢ एक हिंसक अपराध के साक्षी होना

➢ माता-पिता / करीबी लोगों को समय से पहले खो देना (दुख)।

➢ गंभीर भावनात्मक दुर्व्यवहार और उपेक्षा;

➢ धमकाना,

➢ लेंगिकता के कारण होने वाले नुकसान

➢ किसी भी शारीरिक विकृति की उपस्थिति;

➢ भावनात्मक समर्थन आघात के प्रभावों को दूर करता है (क्रॉस, 2004)

लाइफ-टाइम ट्रॉमा अनुभव

- गंभीर आघात प्रभाव, जैसे फ्लैशबैक
- गंभीर मानसिक विकारों के लिए गलत निदान (डाइग्नोसिस)
- जीवन संतुष्टि में कमी
- दुर्व्यवहार के अंतर्निहित मुद्दों की अनदेखी किया जाना
- जोखिम से निपटने के गलत तरीके जैसे की नशे का प्रयोग
- अधिक आघात का अनुभव करने के लिए अधिक तैयार रहना

आघात चक्र (ट्रामा साइकिल) को प्रभावित करने वाले कारक

- एक दर्दनाक घटना के बारे में अनसुलझे संघर्ष, भावनाएं और विचार
- व्यवहार के नकारात्मक दोहराए गए पैटर्न जैसे निरंतर हिंसा का होते रहना
- अभिभावक -बच्चे के संबंध और भावनात्मक लगाव में कमी का होना

आघात चक्र को प्रभावित करने वाले कारक

- मादक द्रव्यों के सेवन से होने वाली गंभीर मानसिक बीमारियां का अनुपचारित या खराब इलाज

- जटिल व्यक्तित्व लक्षण या व्यक्तित्व विकार

हिंसा के लिए जीवन चार्ट

- हिंसा के जीवन चार्ट का आकलन करने के लिए उपकरण/टूल को सही प्रकार समझे।

- जीवन के विभिन्न चरणों के दौरान अनुभव की गई हिंसा का आकलन करें।

हिंसा के लिए जीवन चार्ट

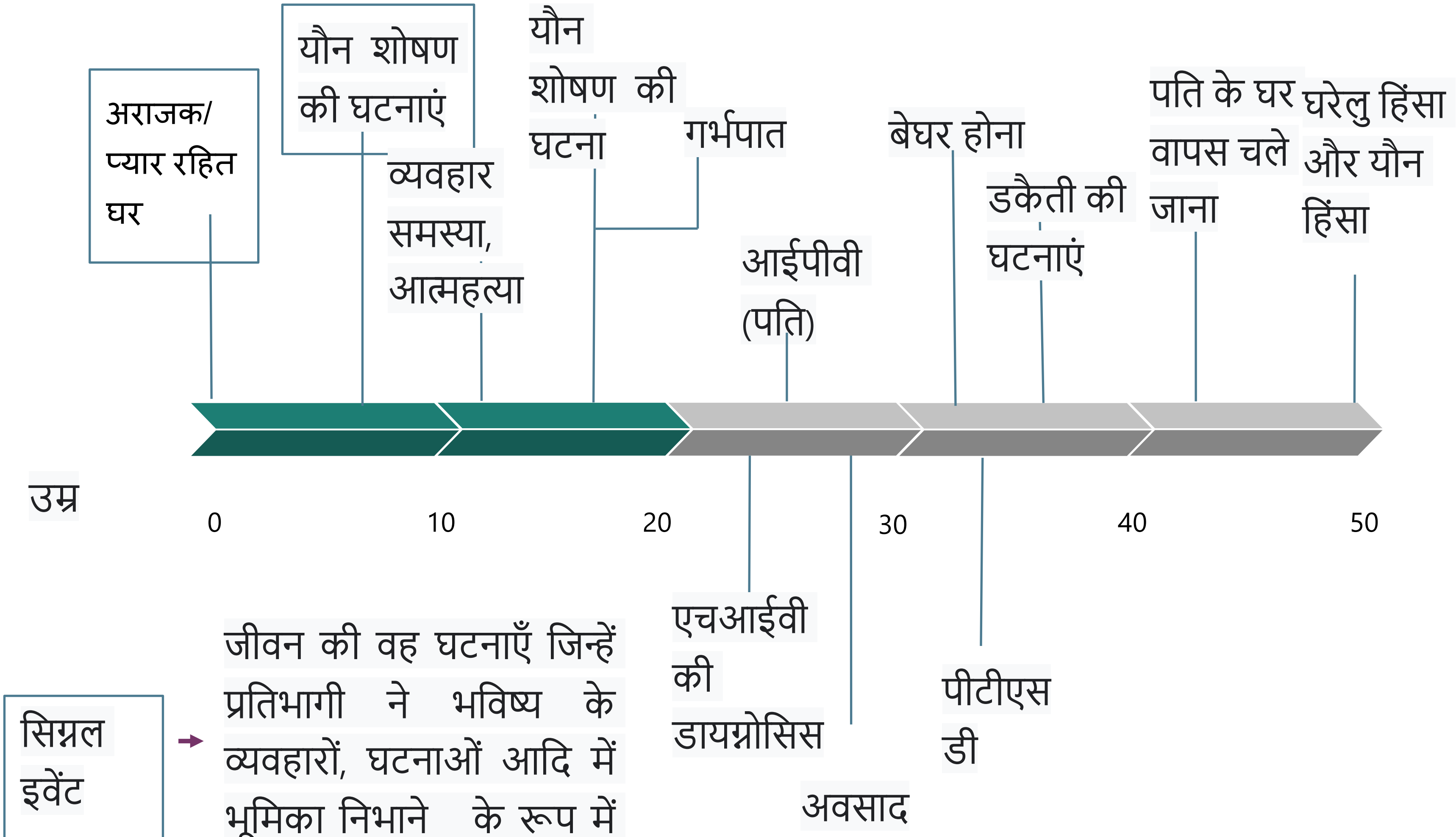

अराजक/ प्यार रहित घर

यौन शोषण की घटनाएं

व्यवहार समस्या, आत्महत्या

यौन शोषण की घटना

गर्भपात

आईपीवी (पति)

बेघर होना

डकैती की घटनाएं

पति के घर वापस चले जाना

घरेलु हिंसा और यौन हिंसा

उम्र

0 10 20 30 40 50

एचआईवी की डायग्नोसिस

अवसाद

पीटीएसडी

सिग्नल इवेंट → जीवन की वह घटनाएँ जिन्हें प्रतिभागी ने भविष्य के व्यवहारों, घटनाओं आदि में भूमिका निभाने के रूप में उजागर किया है।

आकलन और हस्तक्षेप के नारीवादी सिद्धांत

नारीवाद क्या है?

नारीवाद सभी लिंगों के समान अधिकार और उनके समान अवसर होने के बारे में है।

यह विविध महिलाओं के अनुभवों, पहचान, ज्ञान और शक्तियों का सम्मान करने और सभी महिलाओं को उनके पूर्ण अधिकारों का एहसास कराने के लिए सशक्त बनाने का प्रयास करने के बारे में है।

आकलन और हस्तक्षेप के नारीवादी सिद्धांत

नारीवादी मनोविज्ञान क्या है?

नारीवादी मनोविज्ञान लिंग, लिंग श्रेणियों और सेक्सुअलिटी से संबंधित मनोविज्ञान का एक उपक्षेत्र है।

नारीवादी मनोविज्ञान उन सभी ऐतिहासिक मनोवैज्ञानिक अनुसंधानो की आलोचना करता है जो कि पुरुष दृष्टिकोण से किया जाता है और जो दर्शाता है की पुरुष महिलाओ की तुलना में आदर्श और श्रेष्ठ हैं।

आकलन और हस्तक्षेप के नारीवादी सिद्धांत

नारीवाद की लहर

1. 8 वीं सदी में महिलाओं ने वोट का अधिकार और प्रजनन अधिकार की मांग की

2. 1960-70 का दशक: उन संस्थानों पर ध्यान केंद्रित किया जिन्होंने महिलाओं को पीछे रखा। पारंपरिक लिंग और पारिवारिक भूमिकाओं पर सवाल उठाया गया।

3. महिलाओं को अधिक अधिकार: व्यक्तित्व और विद्रोह का स्वागत। कामुकता की मुक्त अभिव्यक्ति।

4. मी टू मूवमेंट का आना: सोशल मीडिया की सक्रियता और समावेशिता, सशक्तिकरण और स्वतंत्रता पर

आकलन के नारीवादी सिद्धांत

1. नारीवाद की दूसरी लहर के दौरान, महिलाओं के खिलाफ हिंसा को केवल परिवार में मौजूद एक स्थिति के रूप में समझा गया था

2. बाद में, पितृसत्ता के प्रभाव और महिलाओं के खिलाफ हिंसा में इसकी भूमिका को समझा गया

3. तीसरी लहर के दौरान, महिलाओं के खिलाफ हिंसा को न केवल परिवार की स्थिति बल्कि समाज में एक समस्या के रूप में समझा गया

आकलन के नारीवादी सिद्धांत

4. इसके आधार पर, उचित हस्तक्षेप निर्धारित करने के लिए प्रत्येक अपराधी के मूल्यांकन और उसको समझने पर जोर दिया गया था

5. साथ ही महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समझने, आकलन करने और हस्तक्षेप करने के लिए ऐतिहासिक जड़ों और सांस्कृतिक आधारों को नोट किया गया था

आकलन के नारीवादी सिद्धांत

6. हिंसा और आघात का सामना करने वाली महिलाओं की सहायता के लिए साक्ष्य आधारित हस्तक्षेप विकसित किए गए

7. इसका उद्देश्य महिलाओं के खिलाफ हिंसा से ठीक से निपटने के लिए एक दमन-विरोधी, शक्ति संतुलित और सामाजिक रूप से न्यायसंगत वातावरण बनाना है

हस्तक्षेप के नारीवादी सिद्धांत

1.आलोचनात्मक समझ की आवश्यकता: इस विचार को समझना कि महिला की व्यक्तिगत समस्याएं पितृसत्ता और लिंग असमानता के सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में उत्पन्न होती हैं।

2.सामाजिक परिवर्तन के प्रति प्रतिबद्धता: हस्तक्षेप का लक्ष्य न केवल व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करके उसकी मदद करना है, बल्कि समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालना है।

हस्तक्षेप के नारीवादी सिद्धांत

3. परामर्श संबंध समतावादी होना चाहिए: ये संबंध प्रामाणिकता, पारस्परिकता और सम्मान पर आधारित है

4. शक्ति आधारित दृष्टिकोण पर जोर: आघात के लक्षणों को उनसे लड़ने की रणनीतियों के रूप में फिर से तैयार करना और व्यक्ति को विकृत करने के बजाय मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से निपटना (आघात-सूचित देखभाल)

हिंसा के आकलन से परामर्शदाताओं को यह समझने में मदद मिलती है:

- समस्या की गहराई
- जोखिम कारकों की पहचान
- यथार्थवादी सुरक्षा योजनाएं विकसित करना
- उचित परामर्श योजना तैयार करना
- जोखिम कम करना
- सेवाएं देने वाली एजेंसीज को टूल प्रदान करना

परामर्श देते समय ध्यान में रखने के लिए बुनियादी नारीवादी सिद्धांत:

- एक महिला के अनुभव पर भरोसा करें।
- महिला पीड़ित उस हिंसा के लिए दोषी नहीं हैं जिसका वे अनुभव करती हैं
- काउंसलिंग का मतलब सलाह देना नहीं बल्कि महिलाओं के आत्मनिर्णय पर भरोसा करना है

प्रश्न और उत्तर सत्र

धन्यवाद!

रोज़िना अरुल
कार्यक्रम सहायक: प्रशिक्षक

संपूर्णा चक्रवर्ती
कार्यक्रम प्रबंधक

माधुरी एच.एन
सहेयक प्रोफेसर

प्रभा एस चंद्रा
प्रोफेसर और प्रोजेक्ट लीड